Rapid Fire (करेंट अफेयर्स): 05 जनवरी, 2021

drishtiias.com/hindi/printpdf/rapid-fire-current-affairs-05-january-2021

अंटार्कटिका में भारत का 40वाँ वैज्ञानिक अभियान

भारत ने हाल ही में अंटार्कटिका में 40वाँ वैज्ञानिक अभियान शुरू किया है। इसके साथ ही अंटार्कटिका में भारत के वैज्ञानिक अभियान के चार दशक पूरे हो गए हैं। इस नए अभियान के 43 सदस्यों वाले दल को गोवा तट से रवाना किया गया। चार्टर्ड आइस-क्लास पोत एमवी वासिली गोलोवनिन (MV Vasiliy Golovnin) में सवार यह दल 30 दिन में अंटार्कटिका पहुँच जाएगा। 43 में से 40 सदस्यों को वहाँ छोड़ने के बाद यह पोत अप्रैल माह में भारत वापस लौटेगा। साथ ही यह पोत वहाँ पहले से मौजूद वैज्ञानिक दल को भी भारत वापस लाएगा। राष्ट्रीय ध्रुवीय एवं समुद्री अनुसंधान केंद्र (NCPOR), जो कि संपूर्ण भारतीय अंटार्कटिक कार्यक्रम का प्रबंधन करता है, के अनुसार यह अभियान जलवायु परिवर्तन, भू-विज्ञान, समुद्री अवलोकन, विद्युत एवं चुंबकीय प्रवाह मापन, पर्यावरण की निगरानी आदि से संबंधित वैज्ञानिक परियोजनाओं में सहयोग करने तक ही सीमित है; साथ ही यह वहाँ मौजूद वैज्ञानिकों के लिये भोजन, ईंधन तथा अन्य आवश्यक वस्तुओं को पहुँचाने में भी मदद करेगा। भारतीय अंटार्कटिक अभियान की शुरुआत वर्ष 1981 में हुई जिसमें डॉ. एस.ज़ेड. कासिम के नेतृत्व में 21 वैज्ञानिकों और सहायक कर्मचारियों का समूह शामिल था। वर्तमान में अंटार्कटिका में भारत के तीन स्थायी अनुसंधान बेस हैं- दक्षिण गंगोत्री, मैत्री और भारती, जिनमें से मैत्री और भारती संचालित हैं।

कोच्चि-मंगलुरु प्राकृतिक गैस पाइपलाइन परियोजना

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से कोच्चि-मंगलुरु प्राकृतिक गैस पाइपलाइन राष्ट्र को समर्पित की। कोच्चि-मंगलुरु प्राकृतिक गैस पाइपलाइन 'एक राष्ट्र-एक गैस ग्रिड' स्थापित करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम है। 450 किलोमीटर लंबी इस गैस पाइपलाइन का निर्माण 'गैस अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड' (GAIL) द्वारा किया गया है। तकरीबन 12 मिलियन मीट्रिक मानक घन मीटर प्रतिदिन परिवहन क्षमता वाली इस प्राकृतिक गैस पाइपलाइन के माध्यम से कोच्चि स्थित तरलीकृत प्राकृतिक गैस (LNG) रीगैसीफिकेशन टर्मिनल से मंगलुरु में प्राकृतिक गैस ले जाई जाएगी। इस परियोजना की कुल लागत लगभग 3,000 करोड़ रुपए थी और इसके निर्माण के दौरान तकरीबन 1.2 मिलियन लोगों के लिये रोज़गार सृजित किया गया। इस प्राकृतिक गैस पाइपलाइन के माध्यम से घरों के लिये पाइप्ड नेचुरल गैस (PNG) और परिवहन क्षेत्र के लिये संपीड़ित प्राकृतिक गैस (CNG) के रूप में

पर्यावरण-अनुकूल एवं सस्ती ईंधन की आपूर्ति की जाएगी। साथ ही यह वाणिज्यिक एवं औद्योगिक इकाइयों को भी प्राकृतिक गैस की आपूर्ति करेगा। इस तरह स्वच्छ ईंधन के उपयोग से वायु प्रदूषण को कम कर वायु गुणवत्ता में सुधार लाने में सहायता मिलेगी।

विश्व ब्रेल दिवस

दुनिया भर में ब्रेल (Braille) लिपि के महत्त्व को रेखांकित करने के लिये प्रतिवर्ष 04 जनवरी को विश्व ब्रेल दिवस का आयोजन किया जाता है। ब्रेल (Braille) नेत्रहीन और दृष्टिबाधित लोगों के लिये प्रयोग की जाने वाली एक पद्धति होती है। यह दिवस ब्रेल लिपि के जनक फ्राँस के लुई ब्रेल की जयंती को चिह्नित करता है, जिन्होंने वर्ष 1824 में ब्रेल लिपि का आविष्कार किया था। लुई ब्रेल का जन्म 4 जनवरी, 1809 को फ्राँस के एक गाँव में हुआ था और बहुत कम आयु में ही एक दुर्घटना के बाद उनकी आँखों की रोशनी चली गई, जिसके बाद उन्होंने 15 वर्ष की आयु में ब्रेल लिपि का आविष्कार किया। वर्ष 1824 में बनी इस लिपि को वर्तमान में दुनिया के लगभग सभी देशों में मान्यता मिल चुकी है। विश्व ब्रेल दिवस की स्थापना संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा नवंबर 2018 में की गई थी और इसका उद्देश्य आम लोगों के बीच ब्रेल लिपि के बारे में जागरूकता पैदा करना है। विश्व ब्रेल दिवस शिक्षकों, सरकारों और गैर-सरकारी संगठनों को नेत्रहीन एवं दृष्टिबाधित लोगों के समक्ष मौजूद चुनौतियों के बारे में जागरूकता बढ़ाने का अवसर प्रदान करता है।

तमिल अकादमी

तमिल भाषा और संस्कृति को बढ़ावा देने के लिये दिल्ली सरकार द्वारा तमिल अकादमी की स्थापना की गई है। दिल्ली सरकार ने पूर्व पार्षद और दिल्ली तमिल संगम के सदस्य एन. राजा को तमिल अकादमी का उपाध्यक्ष नियुक्त किया है। यह अकादमी तमिल भाषा और संस्कृति में लोगों के कार्यों को बढ़ावा देने और उन्हें सम्मानित करने के लिये विभिन्न पुरस्कारों की शुरुआत करेगी। साथ ही अकादमी द्वारा तमिल भाषा सीखने के लिये एक भाषा पाठ्यक्रम भी शुरू किया जाएगा। अकादमी द्वारा तमिलनाडु के सांस्कृतिक उत्सवों का भी आयोजन किया जाएगा। ज्ञात हो कि दिल्ली सांस्कृतिक रूप से एक समृद्ध शहर है, जहाँ देश के सभी हिस्सों के लोग रहते हैं और काम करते हैं। दिल्ली में तमिलनाडु के लोगों की भी एक बड़ी आबादी है और इस अकादमी का उद्देश्य दिल्ली के आम लोगों को तमिलनाडु की कला और संस्कृति से अवगत कराना है।